

साथी ! दुःख से घबराता है ?

गोपालदास 'नीरज'



कवि परिचय :

गोपालदास 'नीरज' का जन्म पुरावली, जिला इटावा (उत्तर प्रदेश) में सन् 1926 ई. में हुआ । बचपन में ही उनके पिता चल बसे । इसलिए 'नीरज' ने अपनी चेष्टा से पढ़ा । एम.ए. किया । फिर नौकरी की । अपने को बनाया । 'संघर्ष', 'विभावरी', 'नीरज की पाती', 'प्राणगीत', 'दो गीत', 'मुक्तावली', 'दर्द दिया है', 'बादर बरस गयो' आदि 'नीरज' के लोकप्रिय काव्य-संग्रह हैं । 'नीरज' के गीतों में जीवन के सहज अनुभव अभिव्यक्त हुए हैं । इसलिए वे सब के मन को छू पाते हैं । गीत गाए जाते हैं तो और भी सरस होते हैं ।

भाव-बोध :

इस कविता में कवि अपने साथी को दुःख से न डरने की सलाह देता है । न डरने से दुःख भी सुख बन जाता है । मानव-जीवन में दुःख ज्यादा होता है । सुख बहुत कम । तो फिर दुःख से डरने से, रोने-चीखने से दुःख दूर नहीं होता । दुःख से लड़ना सही रास्ता है । दुःख के बाद सुख आएगा । ज़रूर आएगा, क्योंकि दुःख सर्वदा नहीं रह सकता । दुःख भोगते हुए कोई मर जाय तो भी कोई डर नहीं । डरने से वह दुःख से बच तो नहीं सकता न ! जीवन में दुःख होने के कारण हम सब कर्मतत्पर बने रहते हैं । दुःख पर विजय प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं । जिस प्रकार जलती आग में जलने के कारण लोहे में कालिमा की जगह लालिमा आ जाती है, उसी प्रकार मानव-जीवन में दुःख रूपी संघर्ष के कारण व्यक्तित्व का उत्कर्ष प्रतिपादित होता है । इसलिए कवि 'नीरज' का यह संदेश है कि दुःख को बुरी चीज़ न मानकर मुक्ति का मार्ग मानना चाहिए ।

साथी ! दुःख से घबराता है ?
दुःख ही कठिन मुक्ति का बंधन,
दुःख ही प्रबल परीक्षा का क्षण,
दुःख से हार गया जो मानव, वह क्या मानव कहलाता है ?

साथी ! दुःख से घबराता है ?
जीवन के लम्बे पथ पर जब
सुख दुःख चलते साथ-साथ तब
सुख पीछे रह जाया करता दुःख ही मंजिल तक जाता है ।

साथी ! दुःख से घबराता है ?
दुःख जीवन में करता हलचल,
वह मन की दुर्बलता केवल,
दुःख को यदि मान न तू तो दुःख ही फिर सुख बन जाता है ।

साथी ! दुःख से घबराता है ?
पथ में शूल बिछे तो क्या चल
पथ में आग जली तो क्या जल
जलती ज्वाला में जलकर ही लोहा लाल निकल आता है ।

साथी ! दुःख से घबराता है ?
धन्यवाद दो उसको जिसने
दिए तुझे दुःख के तो सपने,
एक समय है जब सुख ही क्या ! दुःख भी साथ न दे पाता है ।
साथी ! दुःख से घबराता है ?

शब्दार्थ

मुक्ति - आज़ादी, स्वतंत्रता । प्रबल - बड़ा, भारी, प्रचंड । क्षण - घड़ी, पल, वक्त । मंजिल - लक्ष्य । हलचल - हिलने-डोलने की क्रिया या भाव । दुर्बलता - कमज़ोरी । शूल - काँटा । ज्वाला - अग्नि शिखा, लौ, लपट ।

प्रश्न और अभ्यास

1. इन प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) कवि दुःख से न घबराने को क्यों कहते हैं ?

(ख) इस कविता का संदेश क्या है - समझाइए ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

(क) कवि ने मुक्ति का बंधन किसे माना है ?

(ख) जीवन के लम्बे पथ पर कौन साथ-साथ चलते हैं ?

(ग) जीवन की मंजिल तक कौन जाता है ?

(घ) जीवन में हलचल कौन लाता है ?

(ङ) जलती ज्वाला में जलकर क्या लाल बन निकलता है ?

(च) कवि ने किसे धन्यवाद देने को कहा है ?

(छ) दुःख कब सुख बन जाता है ?

3. पंक्तियाँ पूरा कीजिए :

(क) जीवन के

सुख दुःख चलते साथ-साथ तब

(ख) दुःख जीवन में करता,

वह मन की केवल ।

(ग) जलती में जलकर ही लाल निकल आता है ।

(घ) एक समय है जब ही क्या !

..... भी साथ न दे पाता है ।

4. सही अर्थ चुनिए :

(क) प्रबल परीक्षा का क्षण क्या है ?

(i) सुख

(ii) दुःख

(iii) आनंद

(ख) किसमें जलकर ही लोहा लाल निकल आता है ?

(i) दुःख में

(ii) सुख में

(iii) जलती ज्वाला में

भाषा - ज्ञान

1. विपरीत अर्थवाले शब्द लिखिए :

कठिन : _____

दुःख : _____

बंधन : _____

मुक्ति : _____

दुर्बलता : _____

हार : _____

2. इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

परीक्षा, समय, मंजिल, बंधन

3. लिंग बताइए :

लोहा, आग, हार, ज्वाला, पथ, दुःख

4. बहुवचन रूप लिखिए :

एक : _____ सपना : _____

परीक्षा : _____ मंजिल : _____

5. 'जीवन के लम्बे पथ पर जब'... में 'पथ' संज्ञा है और 'लम्बे' विशेषण है जिससे पथ की लम्बाई सूचित हुई है। निम्न वाक्यों में विशेषणों को रेखांकित कीजिए :

(क) कोयल की आवाज़ सुरीली होती है।

(ख) मुझे पाँच रुपये चाहिए।

(ग) हमें गरीब जनता की सेवा करनी चाहिए।

(घ) रमेश एक मेधावी छात्र है।

गृहकार्य :

1. अपने जीवन में आये दुःख के क्षण का वर्णन कीजिए।

2. इस कविता को कंठस्थ कीजिए।

